द्वितीय अन्विति

System of Dating the Inscriptions (Chronograms)

अभिलेखों में तिथिअङ्कन पद्धति

ग्रीक भाषा के शब्द 'chronogram' को विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषित किया है- A chronogram is a sentence or inscription in which specific letters, interpreted as numerals stand for a particular date we rearranged.

अभिलेखों में प्राप्त होने वाली तिथि अङ्कन पद्धति दो प्रकार से प्राप्त होती है-

i. शासन वर्ष या राज्य वर्ष

ii. नियमित संवत् का प्रयोग

i. **शासन वर्ष या राज्य वर्ष**- प्राचीन भारतीय अभिलेखों में गणना का प्रारम्भ राजा के शासन वर्ष से किया गया है। इन अभिलेखों में किसी भी संवत् का प्रयोग दृष्टिगोचर नहीं होता। अशोक के अभिलेखों में शासन वर्ष का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

- **द्बादसवासाभिसितेन मया**-(तृतीय शिला अभिलेख) द्वादशवर्षाभिषिक्तेन मया
- **दसवसाभिसितो संतो**-(अष्टम शिला अभिलेख) दशवर्षाभिसिक्तः सन्
- **षडुवीसतिवस अभिसितेन मे इमानि जातानि**

अवधियानि कटानि-(पञ्चम स्तम्भ अभिलेख)

षड्विंशतिवर्षाभिषिक्तेन मया इमानि जातानि अवध्यानि कृतानि

अशोक ने पंचम स्तम्भ अभिलेख में पूर्णिमा, तिष्यनक्षत्रयुक्त पूर्णिमा, चतुर्दशी, प्रतिपदा, अमावस्या आदि तिथियों का उल्लेख किया है।

खारवेल के हाथी गुंफा अभिलेख (लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का अंत) में

Scanned with CamScanner

प्रथम शासन वर्ष का उल्लेख है- **अभिसितमतो पघमे वसे**- राज्याभिषिक्ति (सम्राट्) के प्रथम शासन वर्ष में।

शासन वर्ष या राज्य वर्ष से अङ्कित अभिलेखों में किसी भी प्रचलित कालगणना या संवत् का उल्लेख न होने से कालक्रम निर्धारण शोध का विषय बन जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक अभिलेखों में तिथि लिखने का प्रचलन नहीं था। इसका कारण संभवत: यह रहा होगा कि प्राचीन भारत में किसी जनप्रिय संवत् का अस्तित्व नहीं था।

संवत् द्वारा तिथि-अङ्कन– अभिलेखों में शनै: शनै: संवत्, तिथि, दिवस, ऋतु, पक्ष आदि के उल्लेख का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। सर्वप्रथम उत्तर-पश्चिमी भारत के विदेशी शासकों के सिक्कों व अभिलेखों में नियमित संवत् का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इतिहासकारों ने अभिलेखीय तथ्यों के आधार पर यह मत प्रस्तुत किया है कि प्राचीन शकपार्थी संवत् तथा कनिष्क संवत् कालांतर में क्रमश: विक्रम संवत् तथा शक संवत् के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शकपार्थी कालगणना (**विक्रमसंवत्**) का उल्लेख शोडास कालीन मथुरा अभिलेख (वर्ष 72) तथा शककालीन खरोष्ठी लिपि में लिखे गए तक्षशिला के ताम्रपट्ट अभिलेख (वर्ष 78) में प्राप्त होता है। संभवत: यह कालगणना पार्थी शासक द्वारा राजाधिराज की उपाधि ग्रहण करने के समय में प्रारम्भ हुई। इसी कालगणना को शकपार्थी राजाओं के उत्तराधिकारियों ने एक नए संवत् का रूप दे दिया। विद्वानों ने इसे विक्रम संवत् माना है। विक्रम संवत् का प्रारम्भ 57 ईसा पूर्व माना जाता हैं। विक्रम संवत् का प्राचीनतम नाम कृत संवत् था। इसी कृत संवत् को मालव संवत् तथा बाद में विक्रम संवत् कहा जाने लगा। पुरातत्त्वविदों व इतिहासकारों ने कृत-मालव-विक्रम संवत् को एक ही नियमित गणना स्वीकार किया। अभिलेखों में इन तीनों नामों से संवत् का उल्लेख प्राप्त होता है। राजपूताना तथा मध्य भारत के अभिलेखों में कृत संवत् का प्रयोग प्राप्त होता है–

-कृतयोर्द्वयोर्वर्ष- शतयोर्द्वय् अशीतयो: 200 80 2 चैत्र पूर्णमास्याम्– नाँदसा यूप अभिलेख (225 ईस्वी) कृत् संवत् 282 (विक्रमसंवत्)

कालांतर में शक शासकों ने सिंधु, सुराष्ट्र और अवंति के भूभाग पर अधिकार कर लिया तथा कृत संवत् की गणना में मालव संवत् का नाम जोड़ दिया। पट्टवायश्रेणी के मन्दसौर अभिलेख में मालव संवत् 529 अंकित है। मालव संवत् का उल्लेख मन्दसौर से प्राप्त हुए यशोधर्मन् (विष्णुवर्द्धन्) के समय के शिलालेख में इस प्रकार किया गया है–

Scanned with CamScanner

पञ्चसु शतेषु शरदां यातेष्वेकान्नवतिसहितेषु।
मालवगणस्थितिवशात्कालज्ञानाय लिखितेषु।।

अर्थात् मालवगणजाति की स्थिति के वश से कालज्ञान के लिए लिखे हुए 589 वर्षों के बीतने पर–मालवसंवत् (विक्रमसंवत्) 589 (532 ईस्वी)

नवम् शताब्दी के पश्चात्वर्ती अभिलेखों में कृत संवत् तथा मालव संवत् के स्थान पर नियमित गणना के लिए विक्रम संवत् का प्रयोग ही दृष्टिगोचर होता है। बीसल देव के दिल्ली-टोपरा स्तम्भ अभिलेख में विक्रम संवत् के साथ मास, पक्ष व तिथि का उल्लेख भी है–

ॐ संवत् 1220 वैशाख शुति 15 [।।] (1163 ईस्वी) (शुक्ल-तिथि)

शकसंवत्– शकपार्थी गणना की स्थापना (57 ईसा पूर्व) के पश्चात् विदेशी मूल के शासक कुषाणवंशी राजा के द्वारा अपने शासनकाल के वर्षों की गणना के साथ एक कालगणना प्रारम्भ की गई। उस काल गणना ने एक संवत् का रूप ले लिया जो शक संवत् के नाम से प्रचलित हुई। शक संवत् से युक्त प्राचीनतम अभिलेख सारनाथ बौद्ध प्रतिमा अभिलेख है जो कि कनिष्क कालीन है– महाराज कणिष्कस्य सं 3 हे 3 दि 20 (संवत्सर तीन, हेमंत मास, के तीसरे दिन 22वीं, तिथि।

शकसंवत् का प्रारम्भ विद्वानों ने 78 ईस्वी माना है। रुद्रदामन् के गिरनार अभिलेख में भी शक संवत् की ही गणना मानी गई है– **महाक्षत्रपस्य गुरुभिरभ्यस्तनाम्नो रुद्रदाम्नो वर्षे द्वि- सप्ततितमे 70, 2 मार्गशीर्ष बहुल-प्रतिपदि**– (72वां वर्ष, मार्गशीर्ष मास, कृष्णपक्ष, प्रतिपदा)

इस अभिलेख में शक संवत् 72 (150 ईस्वी) उत्कीर्ण है। 1955 ईस्वी में भारत सरकार ने ईस्वी संवत् के साथ शक संवत् का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया।

गुप्त संवत्– गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा प्रारम्भ किया गया गुप्त संवत् अभिलेखों में गुप्त वर्ष और गुप्त काल के नाम से भी प्राप्त होता है। गुप्तवंश के पश्चात् काठियावाड़ में वंलभी के राज्य का उदय हुआ। गुप्त संवत् को ही वंलभी संवत् के नाम से जाना जाने लगा। गुप्त संवत् की काल गणना 319 ईस्वी से प्रारम्भ हुई। चन्द्रगुप्त (द्वितीय) कालीन सांची स्तूप प्राचीन अभिलेख में गुप्त संवत् 93 उत्कीर्ण है– सं० 90, 3 भाद्रपद दि० 4 (412 ईस्वी)

बुधगुप्तकालीन सारनाथ बुद्ध प्रतिमा अभिलेख में गुप्त संवत् 157 (476 ईस्वी) उत्कीर्ण है– **गुप्तानां समतिक्रान्ते सप्तपंचाशदुत्तरे शते समानां बुधगुप्ते प्रशासति।। वैशाखमाससप्तम्यां मूले श्यामगते मया कारिता**– (गुप्तवंशी राजाओं के संवत्

Scanned with CamScanner

157 वर्ष बीतने पर, जब पृथ्वी पर बुधगुप्त शासन कर रहे है, वैशाख मास के कृष्णपक्ष की सप्तमी तिथि को-)

गुप्तोत्तरकालीन महाराज संक्षोभ के खोह ताम्रपट्ट में गुप्त संवत् 209 (528 ईस्वी) का उल्लेख है- **स्वस्ति नवोत्तरेऽब्दशतद्वये गुप्तनृपराज्यभुक्तौ------**

गुप्तवलभी के नाम से इस संवत् का उल्लेख द्रोणसिंह (गुप्त संवत् 183 (502 ईस्वी) तथा धरसेन द्वितीय के ताम्रपट्ट गुप्त संवत् 252 (571 ईस्वी) में किया गया है।

गुप्त संवत् नेपाल से काठियावाड़ तक चलता रहा। इस संवत् से युक्त अंतिम अभिलेख वलभी (गुप्त) संवत् 945 (1264 ईस्वी) का प्राप्त हुआ है। विद्वानों का मानना है कि इसके पश्चात् गुप्त संवत् का प्रयोग समाप्तप्राय हो गया।

हर्षसंवत्- थानेश्वर के राजा हर्ष (श्री हर्ष, हर्षवर्द्धन, शीलादित्य) के राजसिंहासन पर बैठने के समय से हर्ष संवत् का आरंभ माना जाता है। राजा हर्ष के किसी लेख में संवत् के साथ हर्ष नाम प्राप्त नहीं होता। राजा हर्ष के बांसखेड़ा से प्राप्त दानपत्र में संवत् 20, 2 (=22) (627 ईस्वी) कार्तिक बदी, और मधुबन से प्राप्त दान पत्र में संवत् 20. 5 (=25) मार्गशीर्ष बदि 6 (630 ईस्वी) ही लिखा हैं। हर्ष संवत् का प्रारम्भ विद्वानों ने 606 ईस्वी के लगभग माना है।

प्रस्तुत संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि प्राय: संवत् का नामकरण संवत् (कालगणना) के प्रारम्भ होने के समय नहीं होता था। अपितु जब कोई संवत् लोकप्रिय हो जाता था, तब कोई विशिष्ट नाम उसके साथ जुड़ जाता था। वह संवत् विशेष अन्य काल गणनाओं से पृथक् प्रतिष्ठित हो जाता था।

तिथिअङ्कन परंपरा के अंतर्गत भारत में गांगेय संवत् (570 ईस्वी), नेवार संवत् (878-79 ईस्वी), कलचुरी या चेदि संवत् (1118-1119 ईस्वी) आदि अनेक संवतों का सीमित समय के लिए सीमित क्षेत्रों में प्रयोग उपलब्ध होता है। विक्रम संवत् तथा शक संवत् का प्रयोग भारत में नियमित रूप से हो रहा है।

• • •

Scanned with CamScanner